**बी.एस.ओ.सी.-114 : समाजशास्त्रीय अनुसंधान की विधियाँ – II**
**अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य**

**कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO**
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-114**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -114 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

**नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।**

## सत्रीय कार्य – I

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।**

1. शोध से आप क्या समझते हैं? सामाजिक विज्ञान में विभिन्न प्रकार के शोध वर्णन कीजिए। 20

2. सामाजिक शोध में **निष्पक्षता** पर चर्चा कीजिए। 20

## सत्रीय कार्य – II

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।**

3. सामाजिक शोध में अवलोकन की भूमिका समझाएँ। सहभागी तथा असहभागी अवलोकन के बीच अंतर स्पष्ट करें। 10

4. व्यापक शोध से आप क्या समझते है? 10

5. जीवन इतिहास विधि क्या है? 10

## सत्रीय कार्य – III

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।**

6. गुणात्मक आँकड़े क्या होते हैं? समझाइए। 06

7. साक्षात्कार अनुसूची क्या है? 06

8. अनुसंधान में आत्म-परावर्तन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। 06

9. प्रमुख सूचनादाता कौन होते हैं? 06

10. पायलट अध्ययन क्या है? 06

## 1. शोध से आप क्या समझते हैं? सामाजिक विज्ञान में विभिन्न प्रकार के शोध वर्णन कीजिए।

**उत्तर**

अनुसंधान या शोध किसी जिज्ञासा, समस्या या प्रश्न के बारे में व्यवस्थित, आलोचनात्मक तथा प्रमाण-आधारित ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया है। यह केवल पहले से उपलब्ध तथ्यों को एकत्र करने का नाम नहीं है। शोधकर्ता किसी विषय पर स्पष्ट प्रश्न बनाता है, पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा करता है, उपयुक्त विधि से प्रमाण जुटाता है, उनका विश्लेषण करता है और ऐसे निष्कर्ष प्रस्तुत करता है जिनकी तर्कसंगत जाँच की जा सके। सामाजिक विज्ञान में शोध का संबंध व्यक्तियों, समूहों, संस्थाओं, संस्कृतियों, मान्यताओं और सामाजिक परिवर्तन से होता है। इसलिए यहाँ केवल संख्याओं को नहीं, मानवीय अर्थों, शक्ति-संबंधों और सामाजिक संदर्भ को भी समझना आवश्यक है।

शोध की मुख्य विशेषताएँ

सामाजिक शोध एक निश्चित समस्या से आरम्भ होता है। इसके उद्देश्य और अवधारणाएँ यथासंभव स्पष्ट होती हैं तथा पद्धति उस समस्या के अनुकूल चुनी जाती है। विश्वसनीयता, वैधता, नैतिकता, पारदर्शिता और आत्मालोचना उसकी गुणवत्ता के महत्वपूर्ण आधार हैं। उदाहरण के लिए किसी नगर में विद्यालय छोड़ने की समस्या पर शोध करते समय विद्यार्थियों की संख्या के साथ परिवार की आर्थिक स्थिति, विद्यालय का वातावरण, लैंगिक मान्यताओं और दूरी को भी समझना पड़ सकता है। शोध कोई पूर्णतया निष्प्रभावित गतिविधि नहीं है; शोधकर्ता को अपने पूर्वाग्रह और अध्ययन की सीमाएँ स्पष्ट करनी चाहिए।

उद्देश्य के अनुसार शोध

**मौलिक या आधारभूत शोध** का लक्ष्य नई अवधारणाएँ और सिद्धांत विकसित करना अथवा मौजूदा व्याख्या की परीक्षा करना है। जैसे सामाजिक स्तरीकरण और अवसर-असमानता के संबंध की वैचारिक पड़ताल। **अनुप्रयुक्त शोध** किसी व्यावहारिक समस्या का समाधान खोजता है;